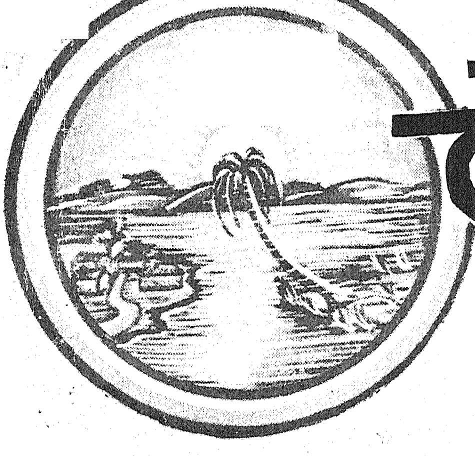
(279)



चढ़ता सूरज

जौहर जलाली

भारत सरकार की विकास योजनाओं पर

श्री गौहर जलाली द्वारा रचित कविता माला का

प्रथम पुष्प

चढ़ता सूरज

सत्यमेव जयते

लेखक —

गौहर जलाली

स्टेट प्रेस, भोपाल।

[प्रथम आवृत्ति २,०००]

दो शब्द

(कवि के विषय में श्री भगवानसहाय चीफ कमिश्नर द्वारा)

श्री गौहर जलाली भाव और भाषा दोनों ही में बे मिसाल हैं । मैं जब भी उनकी कवितायें पढ़ता हूँ उनमें मुझे कबीरदास की झलक मालूम होती है । सच्चे मानव धर्म के सन्देश से उनकी कविता सिंची हुई होती है । उनका साहित्य प्रगतिशील है और साथ ही साथ आदर्शवादी । अगर आदर्श प्रगतिशील है तो आदर्शवादी और प्रगतिशील साहित्य में कोई सङ्घर्ष नहीं है । शैली और भाषा दोनों ही सीधी, सच्ची और सादी हैं । और हिन्दी और उर्दू के आपसी तर्क-वितर्क से परे है । जन साधारण के लिये ही उनकी रचनायें हैं और ऐसे ही साहित्य की आज जरूरत है ।

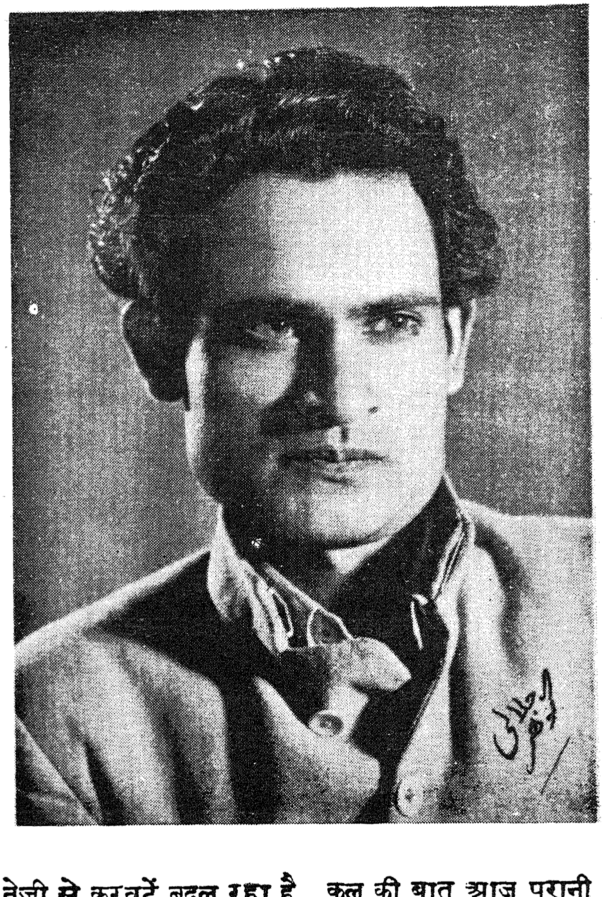
मुझे खुशी है कि भोपाल शासन उनकी कुछ रचनाओं को पुस्तक के रूप में छाप रहा है मुझे विश्वास है कि हमारा समाज उन्हें अपनायेगा ।

भोपाल ।
१—१२—५४

—भगवानसहाय

पहली बात

—गौहर जलाली



वक्त बड़ी तेज़ी से करवटें बदल रहा है, कल की बात आज पुरानी हो चुकी और आज की बात कल की नस्लों की नज़र में एक सड़ी हुई लाश होगी, ऐसा क्यों है? इन्सान आज

इतना बेचैन क्यों नज़र आ रहा है? ज़रूर यह अपनी मंज़िल से भटक गया है इसे एक रा की ज़रूरत है............सचाई के रास्ते को जिसका नक़्शा माँ के पेट में ही उसके दिल नक़्श कर दिया गया था लेकिन अब उस पर वक्त के धारे मनों मट्टी छोड़ गये हैं और व उस मट्टी से नये-नये खिलौने बना कर खेल रहा है, मज़हब के खिलौने, मतलब परस्ती खिलौने और ऐसे ही अन्य बहुत से खिलौने, वह सदियों से बना-बना कर ज़िन्दगी बाज़ारों में बेच रहा है, खिलौने टूट रहे हैं और बन रहे हैं. इन्सान हँस रहा है और रो रह है..............कभी-कभी गहरे विचारों की नुकीली कुदाल इस नक़्शे तक पहुँच जाती है औ पल भर के लिये वह चमक उठता है, जैसे काली घटाओं में बिजली ....पल भर लिये रास्ते रोशन हो जाते हैं और पागल इन्सान ऐसा सोचता है जैसे वह सपना देख रहा हो मगर ऐसे समय मैं सपना नहीं देखता बल्कि कलम उठा कर लिखने लगता हूँ। लोग कहते ये कविताएं हैं मगर मैं कहता हूँ ये जीवन के नक़्शे को कुछ आड़ो-टेढ़ी लकीरें हैं जिन्हें मैं रोज़ ही बनाता और बिगाड़ता रहता हूँ। विचारों की कुदाल बराबर चल रही है और मेरी नज़ नक़्शे तक पहुँचने के लिये बेचैन हैं।

मैंने कविताएं लिखीं और साहित्य प्रेमी श्री अविनाशचन्द्र राय एडीटर 'नवप्रभात' उन्हें अपने अखबार में जगह दे दी। कविताओं के पर लग गये और वे उड़ती-उड़त श्री भगवानसहाय चीफ कमिश्नर भोपाल तक पहुंच गईं और उनकी मोहब्बत ने उन्हें पुस्तक का रूप दे दिया। ये कविताएं, समय की पुकार पर देहातियों के लिये उन्हीं की भाषा में लिखी गई हैं। अरबी, फारसी और संस्कृत की भारी-भारी चट्टानों पर समाधि लगाकर बैठने वालों क शायद उन में मिठास न मिले अगर ऐसा हो तो मेरे लिए दुःख की बात नहीं। मैं तो बस देहाती भाइयों से बात कर रहा हूँ, अगर वे इन कविताओं को समझते हैं और उनमें थोड़ी सी भी जागृति पैदा होती है तो मैं अपनी कोशिश को कामयाब समझूँगा।

आज की दुनियां मुश्किल पसंद नहीं, बल्कि लोग चाहते हैं कि हर वह बात जो उन तक पहुँचे सीधी-सादी और फौरन समझ में आने वाली हो। अमरीका, रूस और चीन की तरक्की और शोहरत का भेद भी इसी में छिपा हुआ है। यही वजह है कि आज के साहित्यकार आसान ज़बान को अपना रहे हैं और वह दिन दूर नहीं जब ये फौलादी दीवारें समय की तेज़ आंच से पिघल कर पानी की तरह बह जायेंगी।

इस किताब के पहले हिस्से में सिर्फ किसानों से बात की गई है और दूसरे हिस्से में वे कविताएं शामिल हैं जो 'नवप्रभात', भोपाल में रोज़ाना के हालात पर छपती रहती हैं। आदमी

ग़लतियों का पुतला है, मैं भी आदमी होने के नाते इन से नहीं बच सकता, इसलिए पहले ही किताब पढ़ने वालों से अपनी अनजानी ग़लतियों की माफ़ी चाहता हूँ ।

अगर यह किताब पसन्द की गई तो इसी क़िस्म की दूसरी किताबें लिखने की कोशिश करूंगा ।

गौहर जलाली,
क़ाज़ीपुरा, भोपाल ।

तारीख १० अक्टूबर, १९५४ ई०

शिक्षा

अपने हाथों आप बनाओ गांव गांव स्कूल ।
अपने मन मंदिर में चढ़ाओ शिक्षा के तुम फूल ॥

शिक्षा का सब रूप है जगमें शिक्षा का सब खेल ।
फरफर मोटर टनटन तांगा छिक छिक करती रेल ॥

शिक्षा की घर-घर चरचा हो घर-घर हो प्रचार ।
शिक्षा को भगवान् समझ लो शिक्षा को औतार ॥

शिक्षा के नौकर चाकर हैं राजा और वजीर ।
इसके पांव दबाने वाले साधू संत फकीर ॥

इसके दरवाजे के भिखारी नाजिम थानेदार ।
गिरदावर पटवारी इसके घर के चौकीदार ॥

धरती घूमे तारों की मालाएं जपे आकाश ।
शिक्षा की सब सूझ बूझ है शिक्षा का प्रकाश ॥

शिक्षा से मन की कुटिया में जलें ज्ञान के दीप ।
बिन शिक्षा मोती के मानव दो कौड़ी की सीप ॥

शिक्षा से मानवता जागे मानवता से प्यार ।
प्यार से जागे अंग-अंग में जग दाता करतार ॥

जगदाता करतार बनाए सारे बिगड़े कार ।
सारे बिगड़े कार बनें तो अपना बेड़ा पार ॥

सारे गांव निवासी मिल कर शिक्षा को अपनाओ ।
बीच भंवर से बच निकलेगी टूटी-फूटी नाव ॥

देश उन्नति के रस्ते में फूल बिछाते जाओ ।
पग-पग पर शिक्षा का तुम उपदेश सुनाते जाओ ॥

ढूंड-ढूंड के शिक्षक लाओ करो न सोच विचार ।
शिक्षा बिगड़े काम बनाए होवे गांव सुधार ॥

शिक्षा से ४० वर्ष में जागे कालीदास ।
आज भी जिसके नाम से विद्वानों के मुंह में मिठास ॥

शिक्षा तुलसीदास बनाए शिक्षा दास कबीर ।
शिक्षा के हृदय में बैठे राज करें रघुबीर ॥

तानसेन के कंठ में शिक्षा मीठे राग रचाए ।
देशभक्त बापू को शिक्षा कृष्ण-औतार बनाए ॥

वीर जवाहर शिक्षा के बल देश का तन-मन जीतें ।
शिक्षा की कृपा से सुधरें सारे जग की रीतें ॥

डाल-डाल पर पात-पात पर लिखदो शिक्षा-शिक्षा ।
आज तुम्हारे घर आए लेने भगवान् परीक्षा ॥

राज्य महल में उल्लू बोले कुटियों में शहनाई ।
शिक्षा को जो भी अपनाले शिक्षा उसकी माई ॥

शिक्षा से गौहर की कविता आज तुम्हारे आगे ।
शिक्षा से मानवता चेते शिक्षा से जग जागे ॥

एकता के फल

कोड़ी-कोड़ी गंज बने और दाना-दाना ढेर ।
बूंद-बूंद सागर बन जाय रत्ती-रत्ती सेर ॥

आपस में ऐसे मिल जाओ जैसे तन के अंग ।
जैसे जल में रहे मछरिया जैसे फूल में रंग ॥

बैर बुराई पाप की जड़ है ठंडे दिल से सोचो ।
अपनी छाती आप न चीरो अपने पर मत नोचो ॥

दस मिल कर जब कदम बढ़ायें कांप उठे यमराज ।
प्रेम संगठन से बन जायं सारे बिगड़े काज ॥

नष्ट करें मानवता सारी पाप कपट के तीर ।
इनके घाव पुरसों गहरे दुख देवें गम्भीर ॥

दो मिलकर सौ कोस चलें और एक चले दो कोस ।
एक रहें तो शेर बबर हैं फूटें तो खरगोश ॥

फूल पंखड़ी फूल में जब तक तब लग फूल कहाय ।
बिखरे तो माटी में मिल कर पग-पग कुचली जाय ॥

माटी के चमत्कार

माटी सोना माटी चाँदी माटी सब संसार ।
माटी काया माटी माया माटी गेहूँ ज्वार ॥

माटी ओढ़ें और बिछाएं माटी सब जन खाएं ॥
जीवन का यह अंत है एक दिन माटी में मिल जाएं ॥

माटी के सब महल अटारी माटी के सब रंग ।
माटी की सुन्दरता सारी माटी के सब अंग ॥

माटी को बेकार समझना माटी का अपमान ।
माटी जग की जीवन ज्योति माटी जग के प्रान ॥

माटी की सेवा से भिच्छु बन जाये धनवान ।
माटी की सेवा से ऊँची अपने देश की शान ॥

माटी आँखों की ठंडक है माटी मन की धीर ।
माटी लुगड़ा माटी गहना माटी तन का चीर ॥

अपनी मेहनत से पहुँचाओ माटी में रसधार ।
माटी जीवन के फल उगले उगले गंज हजार ॥

पंचायत

आपस के झगड़ों में जाये जीवन का प्रकाश ।
थाने और कचेरी जाकर करो न धन का नाश ॥

अपने झगड़े आप चुकाओ सुनो पंच की बात ।
जानवरों की आदत छोड़ो बनो मनुष्य की जात ॥

ढोर मवेशी काठ कवाड़ा झगड़ों में बिक जाय ।
भूख से बीबी बच्चे तड़पें माल कचेरी खाय ॥

हल बक्खर में घुन लग जाय खेत पड़त हो जायें ।
जीवन का पल-पल भारी हो आशाएं सो जायें ॥

जेल में गाली जूता खाओ हाथ कछु न आए !
जोड़ी-जाड़ी गिरह की पूंजी झगड़े में लग जाय ॥

लाख रुपया पास होये तो पल भर में खुट जाय ।
फसो कचेरी के फंदे में तुम तो गला घुट जाय ॥

गांव-गांव पंचायत खोलो बात है यह अनमोल ।
थाना और कचेरी भैया निरी ढोल की पोल ॥

आज अगर तुम मेहनत करलो कल पाओ आराम ।
जीवन भर व्याकुल ही रहोगे छोड़ के अपना काम ॥

चोई बोकर फूल कमल की कौन करे है आश ।
गेहूँ कैसे काटे कोई बोकर बीज कपास ॥

जैसा बोओ वैसा काटो यह है जग की रीत ।
जागो-जागो देश किसानों समय न जाये बीत ॥

हरिजनों के साथ मेल-जोल

सुनो - सुनो ऐ गांव बासियो अपने लाभ की बात ।
भेद भाव के बंधन तोड़ो सब की ऊंची जात ॥

सारे जग का एक ही मालिक एक ही पालनहार ।
हिन्दू, मुस्लिम, आदिवासी, धोबी, बढ़ई, लुहार ॥

एक नदी के घाट हजारों सब के नाम हजार ।
कोई कहे है अल्ला ईश्वर कोई कहे करतार ॥

प्रेम की जोत जगाओ मन में उजियारा हो जाय ।
पाप कपट का घोर अंधेरा दुनिया से खो जाय ॥

अपने मन में प्रेम रचा कर कोमल गीत सुनाओ ।
मिल - जुल कर भारत माता के आगे शीश झुकाओ ॥

हरिजनों को गले लगा लो मत लो इनका श्राप ।
मानवता के नाते इनको नीच समझना पाप ॥

इनको ठोकर मारने वाला कभी न हो खुश हाल ।
इनका हक़ जो छीन झपट ले रहे सदा कंगाल ॥

यह भी हैं भगवान राम के चित्र इन्हें मत भूलो ।
माया आनी जानी है इस माया पर मत फूलो ॥

मत दुतकारो मत ललकारो कहो हरिजन भाई ।
इनके मन में राम बसे आंखो में गंगा माई ॥

भंगी, भोई, नाई, धोबी करें तुम्हारा काम ।
कड़ी - कड़ी विपताएं सहकर तुमको दें आराम ॥

यह चाहें तो एक ही दिन में करदें चौपट काज ।
बुद्धि से सोचो तो भैया जग में इनका राज ॥

नैना इनके चांद और सूरज नीर गगन के तारे ।
इनको दुख देने से डरो तुम यह भगवान के प्यारे ॥

कड़ी है इनकी मेहनत भैया कड़ा है इनका काम ।
इनको मानो इनको जानो करो इन्हें प्रणाम ॥

इनके खातिर बापू जी ने मन्दिर के दर खोले ।
चीखा सारा जग पर बापू जय मानवता बोले ॥

देख - देख मुसकाय देवता खोल गगन के द्वार ।
बापू की जय - जय कारों से गूंज उठा संसार ॥

किसान की शक्ति

कायरता की बात न सोचो हिम्मत से लो काम।
काम सफल कर देगा सारे अल्ला ईश्वर राम ॥
तुम चाहो तो धरती उगले हीरों के अम्बार।
तुम चाहो तो पत्थर से भी निकले अमृत धार ॥
तुम चाहो तो हल बक्खर से पर्वत को सरकाओ।
तुम चाहो तो घास फूस में केसर रंग रचाओ ॥
तुम चाहो तो सूने जंगल फूलों से भर जायें।
तुम चाहो तो दुख के जहरी नाग सबही मर जायें ॥
तुम चाहो तो नदी नालों के मुंह फिर-फिर जायें।
तुम चाहो तो महनत के बादल अमृत बरसायें ॥
तुम चाहो तो हर गांव बन जाये स्वर्ग समान।
सुथराई में काट के रख दो बड़े बड़ों के कान ॥
सुन्दरता की मूरत बनजाय हर एक मकान।
लिपी पुती दीवारें घर की सजा हुआ सामान ॥
घर घर चैन की बंसी बाजे खेत खड़े लहलायें।
लहक उठे मेहनत की बगिया झूम उठें आशायें ॥
तुम चाहो तो गांव तुम्हारे शहरों को शरमायें।
देखने वाले देख देख कर हैरत में रह जायें ॥
तुम भारत के रखवाले हो तुम भारत की शान।
देश की सुन्दरता है तुमसे तुम मज़दूर किसान ॥

खाद के फायदे

खेतों की नस नस में भरदो कूट कूट के खाद।
फिर देखो कैसा मिलता है मेहनत का प्रसाद ॥
खाद जमीं का उत्तम भोजन खाद जमीं की जान।
खाद अगर धरती को पहुंचे हो जाये कल्यान ॥
खाद मिले तो धरती उगले हीरा, मोती, लाल।
ग़ल्ले से कोठे भरजायें जनता हो खुश हाल।
देश में पांव धरते कांपें भूखमरी और काल।
बलि बलि जाये भारत माता चैन करे बंगाल ॥
मध्यभारत गीत अलापे नाच उठे भोपाल।
राजिस्तान में मुरली बाजे यू० पी० देवे ताल ॥
बापू की जय जय से गूंजे पानीपत करनाल।
आजादी की बीन बजायें वीर जवाहरलाल ॥

तालाब, ट्रैक्टर, पक्के पुल और पक्की सड़कों की जरूरत

पक्की सड़कें पक्के घर पक्के खलियान बनाओ।
सब कामों में भारत की सरकार का हाथ बटाओ ॥

कच्चे पुल का साथ भी कच्चा छोड़ो ऐसा साथ।
पक्के पुल की नींव डाल कर धोलो अपने हाथ ॥

रोज के झगड़ों का हो जाय चार घड़ी में नाश।
हिम्मत से लो काम तो बढ़कर छू लो तुम आकाश ॥

नये-नये हल बक्खर ढालें दुनियाँ के विद्वान।
तुम भी अपने परों को झाड़ो सीखो नई उड़ान ॥

ट्रेक्टरों से धरती तोड़ो बनो समय के राम।
दो दिन में हो जाय सफल दो चार वर्ष का काम ॥

तुम धरती के सच्चे सेवक तुम धरती के लाल।
तुम चाहो तो धन दौलत से देश हो माला माल ॥

डगर - डगर पर राधा नाचे नाचें चारों धाम।
नगर - नगर में तान उड़ाएं मुरली वाले श्याम ॥

गोकुल में दीवाली आए वृन्दावन मुसकाय ।
सावन बरसे भादों गरजे हरियाली छा जाय ॥

गंगा जमुना हिल-मिल गायें गायें नर्मदा माई ।
सुन्दर-सुन्दर सपने आयें आशा ले अंगड़ाई ।

सुखी हो सारा देश तुम्हारा सुखी कुटम परिवार ।
सुखी हों सारे लोग-लुगाई बहे प्रेम की धार ॥

दुख के सब कारण मिट जायें मिट जायें भय सारे ।
निर्भय होकर बोले जनता देश की जय-जय कारें ॥

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई आपस में मिल जायें ।
पिढ़ियों की आशा पूरी हो प्रेम कमल खिल जायें ॥

देश का झंडा ऊंचा होकर झूम-झूम लहराये ।
आजादी का सुन्दर दीपक नगर-नगर मुसकाये ॥

बरखा में क्यों सूखा होवे नाचें काहे काल ।
खोदो मिल कर नदी, नाले, नहरें झीलें, ताल ॥

जहाँ-जहाँ भी पग धर दो तुम धरती फूल खिलाए ।
रसका लोभी भंवरा पल-पल गीत तुम्हारे गाए ॥

खेत तुम्हारे सोना उगलें हल पारस बन जाय ।
सोच-समझ कर काम करो तो जहर भी रस बन जाय ॥

अस्पताल की जरूरत

निस दिन मौत के मुंह में जायें कितने दुखी इन्सान ।
देवी देवता के चक्कर में गए हजारों प्राण ॥

नगर नगर में हास्पिटल हैं नगर नगर में वैद्य ।
डाक्टरों ने खोल दिए हर बीमारी के भेद ॥

अपनी क्रिया अपने हाथों करते हो क्यों भंग ।
खाली हाथ करोगे कब तक विपदाओं से जंग ॥

देदो बच्चों के हाथों में शिक्षा की पतवार ।
टूटी - फूटी नाव तुम्हारी हो जायगी पार ॥



अच्छी नस्ल के मवेशी

उत्तम नस्ल के ढोर मवेशी बांधो अपने द्वार ।

देश बने बलवान तुम्हारा बहे दूध की धार ।।

घर घर दूध दही हो जाये घर घर मट्ठा मस्का ।

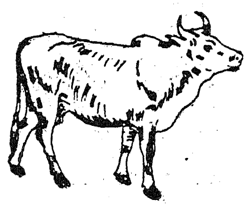
सारे देश में ठाटें मारे सागर जीवन रस्का ।।

नकली घी का भोजन करके भारत मां दुखयारी ।

लोभी धनवानों ने अपने देश से की गद्दारी ।।

वेजोटेबिल घी से घर घर बीमारी का फन्दा ।

भाड़ में जाये ऐसी पूंजी कौन करे यह धन्धा ।।



बच्चों के खेल

बच्चों के, तुम खेल कूद का रखो हमेशा ध्यान ।
खेल हों ऐसे जिनसे, बालक बनें भविष्य बलवान ।।
ऐसे ऐसे खेल सिखाओ चन्चल बने शरीर ।
तन मन में सुन्दरता जागे बनें देश बलवीर ।।
रनभूमि में ऐसे गरजें जैसे भूखा शेर ।
दुश्मन आंखें चार करे तो दुनियां हो अंधेर ।।
छाती तान बढ़ें जब आगे धरती थर थर कांपे ।
दुश्मन इनके आगे पागल कुत्ते जैसा हांपे ।।



भूमि-दान

गांव - गांव विनोबा भावे मागें भूमि - दान ।
देश को बेकारों की सेवा करना धर्म महान ॥

देश दिशा की करो कल्पना शासन का दो साथ ।
शासन के तुम माई बाप हो शासन के तुम हाथ ॥

जो कुछ हो मिल बांट के खाओ बनो न तुम कंजूस ।
ऐके से हैं आज सुखी यूरुप, अमरीका, रूस ॥

मौत की आंधी आय तो मानस तिनके सा उड़ जाय ।
बाग बगीचा महल अटारी कछु काम न आय ॥

जो करना हो आज ही करलो झूठी कल की बात ।
मौत खड़ी है बरछा ताने सांस रहे के जात ॥



कि

कि र णों

णों

मेरे गीत

मेरी कवितायें लिखी हैं, सूरज–चांद–सितारों पर,
मानवता की लहर है मेरे, गीतों के इकतारों पर ।
मेरा मन आजाद है, सोने--चांदी की ज़न्जीरों से,
मैं फूलों की सेज उलट कर, सोया हूं अंगारों पर ।

क्या तेरा क्या मेरा ?

खींच के जिस दिन सांस की डोरी, मौत लगाये डेरा,
टूट के रह जाये पल भर में आशाओं का घेरा ।
दो दिन के सब हैं ये झमेले, दो दिन के सब मेले,
जब टूटे जीवन इक–तारा, क्या तेरा क्या मेरा ?

भविष्य की ओर

आज की विपताओं पर मत जा देख भविष्य की ओर ।
रोते रोते नाच उठेंगे आशाओं के मोर ॥
दुख के ज़हरी शूल बनेंगे सुख के कोमल फूल ।
काली काली रात के पीछे जगमग जगमग भोर ॥

हंसते हंसते जीता जा !

तेरी राह में जीवनराही, कांटे भी हैं फूल भी हैं।
अमृत से भी प्यास बुझाले, ज़हर भी हंसकर पीता जा ॥
सुख से फूल के भूल न मंज़िल, दुःख से हिम्मत हार न तू।
रोने से कुछ हाथ न आये, हंसते-हंसते जीता जा ॥

अटल विश्वास

अगर जीवन का सुख चाहे अटल विश्वास पैदा कर,
दुखों के शूल में, फूलों की मीठी बास पैदा कर।
ज़हर क्यों पी रहा है, जब तेरे हाथों में अमृत है,
निराशा छोड़ें दिल में, ज़िन्दगी की आश पैदा कर।

हिन्दी-उर्दू

भारत-माता की छाती से, फूटी हैं दो दूध की धारें ।
किसको चाखें किसको थूकें, किस पर अपना तन-मन वारें ॥
हिन्दी उर्दू गंगा जमना, दोनों बहिनों को बहने दो ।
किसको देवी कहकर पूजें, किसको पापन कहकर मारें ॥

समय के धारे पर

न कर पतवार ढीली नर्म लहरों के इशारे पर ।
बहा दे नाव जीवन की समय के तेज धारे पर ॥
खुशी से कूद पड़ उठते हुये तूफान में "गौहर" ।
अरे नादान मिलते हैं कहीं मोती किनारे पर ॥

भाग निराशा से

जिसके मन में आश न हो, वह जीवन पथ पर भटके ।
उसकी आंखो में यह दुनिया, कांटा बन कर खटके ॥
आशा के जीवन अमृत को, मन गागर में भर ले ।
भाग निराशा की दुनिया से, पग-पग मौत के झटके ॥

नेहरू का आवहान

तुम चाहो तो पग-पग फूटे,
विश्व शान्ति की रसधारा,
निर्धनता से टक्कर लेने,
भारत की जय बोल के निकलो ।

वीर जवाहर आज तुम्हारी,
शक्ती तुम से मांग रहा है,
वक्त तुम्हें ललकार रहा है,
घूंघट के पट खोल के निकलो ॥

वह दिन दूर नहीं

वह दिन दूर नहीं जब साथी, दुख की बैरन रात ढलेगी ।
सुख के मीठे राग रचेंगे, विपदा की जंज़ीर गलेगी ।।
भारत के कोने-कोने में, मानवता के दीप जलेंगे ।
सुन्दर-सुन्दर फूल खिलेंगे, आशाओं की डाल फलेगी ।।

जीवन की तस्वीर

मानवता बिन जग में, मानव,
बिन मोती की सीप समान ।
जैसे साकी बिन, मधुशाला,
बिन ज्योति के दीप समान ।।
क्रोध-कपट जिस मन के वासी,
वह मन है बन की तस्वीर ।
सच्चाई का रंग न हो तो,
सूनी जीवन की तस्वीर ।।

युद्ध का लश्कर

युद्ध का लश्कर बढ़ते बढ़ते,
अम्न जहां तक आ पहुँचा है ।
दुनियां वालो होश में आओ,
तीर कमां तक आ पहुँचा है ॥
ऐ मानवता के दीवानों,
अपनी मंजिल को पहचानों ।
रुक-रुक कर यह बात न सोचो,
कौन कहां तक आ पहुँचा है ॥

साम्प्रदायिकता

यह फिरकापरस्ती की भड़कती हुई आग,
लूटे न कहीं अम्न की देवी का सुहाग ।
भारत की भलाई है इसी में ऐ ! दोस्त,
हो नष्ट हर एक ज़हर उगलता हुआ नाग ॥

रोने से दुःख दूर न होगा

वह दिन दूर नहीं जब जग में, शैतानी दस्तूर न होगा ।
मानव, मानव की चौखट पर, झुकने को मजबूर न होगा ॥
मिल-जुल कर सब कदम बढ़ाओ, मत सोचो, मैदान में आओ ।
चीखों से विपदा न टलेगी, रोने से दुःख दूर न होगा ॥

प्रेम का सूरज

प्रीति के रस में जहर न घोलो, देखो अपने हाथों से ।
काम नहीं बनता है कोई, क्रोध कपट की बातों से ॥
कब तक आखिर खींचातानी, गुस्से को अब थूक भी दो ।
प्रेम का जगमग सूरज ढालो, क्रोध की काली रातों से ॥

राष्ट्रीय एकता

(श्री भगवानसहाय का भाषण सुनकर)

एकता मानव का जीवन, फूट है मानव की मौत ।
एकता फूलों की खुशबू, एकता तारों की जोत ।।
एकता में राम शक्ति, फूट में रावण का बल ।
एकता अमृत की धारा, एकता जीवन का फल ।।

एकता से फूलता फलता है क़ोमों का चमन ।
एकता के सामने चलता नहीं कोई दमन ।।
एकता से नष्ट होगा यह दुःखों का अन्धकार ।
एकता से आयेगी इस देश में इक दिन बहार ।।

दुनियां के विद्वानो जागो !

जागो ! दुनियां के विद्वानो, मौत के तूफां आते हैं ।
युद्ध के खूनी बादल, सारी दुनियाँ पर मँडराते हैं ॥
अम्न भरे गीतों से, शैतानों की शक्ति नष्ट करो ।
उद्‌जन बम से ये लोभी, जग को स्मशान बनाते हैं ॥

जैसे सागर चढ़ता जाए

आश की डोरी टूटी-टूटी पांव के छाले फूटे-फूटे ।
जीवन पथ पर एक भिखारी लाठी के बल बढ़ता जाये ॥
दूजी ओर जो देखा मैंने जगमग-जगमग कार में बैठे ।
ऐसे गुजरे एक महाशय जैसे सागर चढ़ता जाये ॥

खूनी हाथ बदल दो

जागो दुनिया के इन्सानों, दुनिया के हालात बदल दो ।
मानवता के राग रचाकर, ये सूने दिन रात बदल दो ॥
कब तक घर-घर आग लगेगी, कबतक पग-पग खून बहेगा ।
जिन हाथों में जंग की डोरी, ऐसे खूनी हाथ बदल दो ॥

भय.........!

भय से चाँद सितारे मैले, भय से सूरज काला,
भय से अमृत घूंट हलाहल, भय से सुई भी माला ।
भय जीवन बगिया का पतझड़, भय है मौत की आंधी,
भय से कंकर कंकर पर्वत, भय है पांव का छाला ।

शान्ति को ललकारें

कितने बाप तड़पे हैं, कितनी मायें रोई हैं ।
हाय कितनी आशायें, अर्थियों में सोई हैं ॥
क्या कहीं निकलती है, फांस तेज भाले से ।
मास काट कर कोई, बांधता है छाले से ॥
जुल्म को जो उकसायें, शांती को ललकारें ।
फैंक दो वह बन्दूकें, तोड़ दो वह तलवारें ॥

जलते श्मशानों पर

जीवन-वीणा के तारों पर मीठे–मीठे राग जगा दो ।
मायूसी के काले बन में, आशा की बिजली चमकादो ॥
दुनियां के विद्वानों जागो, अपनी कोमल रचनाओं से ।
युद्ध के जलते श्मशानों पर, अम्न का तुम अमृत बरसा दो ॥

समय का दीप

समय के दीप की ज्योती,
कभी हंसती कभी रोती ।
मनुज जीवन के रस्ते में,
कभी कंकर कभी मोती ॥

धर्म की पहचान

अगर मानव को अपने धर्म की पहचान हो जाये ।
तो जीवन की कड़ी मंजिल बड़ी आसान हो जाये ॥
जरा छेड़े तो कोई अपनी मन बीना के तारों को ।
दुःखों की चीख मीठी भैरवी की तान हो जाये ॥

जान गई है जनता

ऐ ! फिरका परस्तो तुम्हें कुछ होश नहीं ।
है तंग तुम्हारे लिये भारत की जमीं ॥
जागो, कि तुम्हें जान गई है जनता ।
फूकों से उड़ा करते हैं पर्वत भी कहीं ॥

कइयुम जावेद से

दिल में आ जायें अगर, खौफ के धारे साथी ।
टूट कर खत्म हों, जीवन के सहारे साथी ॥
तूने देखे हैं किनारों में, भी तूफां लेकिन ।
मैंने तूफान में देखे हैं, किनारे साथी ॥

उठ भारत के लाल

दुनियां का हर देश तरक्की के रस्तों पर दौड़ा है ।
उठ भारत के लाल, घड़ी मत टाल, समय अब थोड़ा है ॥
तूने आपस के झगड़ों में, अपनी शक्ति खोई है ।
अपने घर की दीवारों से, अपने सर को फोड़ा है ॥

अपनी शक्ति

दूजे के कांधे चढ़कर जो अपनी मंजिल पाते हैं ।
आगे चल कर जीवन-पथ पर पग-पग ठोकर खाते हैं ॥
अपने बल पर छाती तानों, अपने बल पर मान करो ।
कागज़ के फूलों पर भँवरे कभी नहीं मंडराते हैं ॥

राजा बने किसान

देहाती जीवन में रचता जाये अगर ज्ञान ।

धीरे-धीरे बनते जायें गांव स्वर्ग समान ।।

घट-घट धरती अमृत उगले गले गंज हज़ार ।

खेत बने सब राजसिंहासन राजा बन किसान ।

खुद अपनी तक़दीर बनाओ

ऐ ! किस्मत को रोने वालो, * खुद अपनी तक़दीर बनाओ ।

मानवता का रंग रचाकर, * जीवन की तस्वीर बनाओ ।।

मज़हब के झगड़ों में कबतक, * अपना सुख बर्बाद करोगे ।

जो सारी दुनिया को कस ले, * प्रेम की वह ज़ंजीर बनाओ ।।

विश्वास के मोती

निराशा हो तो फिर गिरकर, सम्हलना सख्त मुश्किल है।
चट्टानों पर लगे पौधों का, फलना सख्त मुश्किल है॥
अगर विश्वास के मोती, न हों मन के ख़ज़ाने में।
तो जीवन की कठिन मंज़िल पे, चलना सख्त मुश्किल है॥

भविष्य की तस्वीर

रुक जायेंगे विपदा के बरसते हुये तीर।
मेहनत से पिघल जायेगी ग़म की ज़न्जीर॥
दहक़ान के माथे का पसीना देखो।
आती है नज़र साफ़ भविष्य की तस्वीर॥

आजादी की कीमत

एक होकर देश को ऊंचा उठा सकते हैं हम।
शांती के दीप दुनिया में जला सकते हैं हम॥
अपनी आजादी की कीमत जानने की देर है।
नफरतों के ज़हर को अमृत बना सकते हैं हम॥



साम्प्रदायिकता

सच्चाई की आवाज़ दबा देते हैं,
सुई को भी तलवार बना देते हैं।
भारत के वफादार नहीं हैं वे लोग,
जो फिरका परस्ती को हवा देते हैं।

नेहरू जी का भाषण

दोनों देशों पर अगर, कृपा रही भगवान की।
नष्ट हो जायगी शक्ति, फूट के तूफान की ।।
राजनैतिक उलझनें कुछ रोज को मेहमान हैं।
मित्रता अमृत पियेगी, हिन्दो पाकिस्तान की ।।

मंज़िल दूर नहीं

आशा का दीप न बुझने पाये हिम्मत के गुन गाओ।
ढल जायें मुस्कान में सांसें ऐसे गीत सुनाओ ।।
अंधियारों के बीच से दर्शन देगी भोर सुहानी।
मंजिल दूर नहीं है साथी आगे कदम बढ़ाओ ।।

दो कौड़ी की माया

जब लग दुख की धूप न हो तो सूनी सुख की छाया,
निर्धनता का दर्द न हो तो—दो कौड़ी की माया ।

रात न हो तो आंखों को फिर कैसे भाय सवेरा,
सोच न पगले तूने जग में क्या खोया क्या पाया ।

एक मंजिल

राग सौ निकलते हैं, जिन्दगी के तारों से,
फूल लाख खिलते हैं, अकल की बहारों से ।
सब का एक रस्ता है, सब की एक मंजिल है,
बन गया बड़ा छोटा, आदमी विचारों से ।

पंचवर्षीय योजना

तुम चाहो तो देश की धरती, नील गगन को छूले,
भारत मां दुःख दर्द भुलाकर, प्रेम हिंडोले झूले ।
सब मिल जुल कर कदम बढ़ाओ, मिट जांय दुःख सारे,
पग पग पर जीवन आशा की, सुन्दर बगिया फूले ।

तबाही के चिराग

जो उजाड़ें फूलता, फलता हुआ, जीवन का बाग ।
ऐसे हाथों को मिटा दो, फोड़दो ऐसे दिमाग ।।
जिनमें दुनिया की तबाही, जिनमें मानवता की मौत ।
दोस्तो जलने न पायें उन विचारों के चिराग ।।

आश

मन का भय हो दूर तो रस्ते जीवन के खुल जाते हैं,
आशाओं के सूखे पौधे अमृत से धुल जाते हैं।
आश रहे तो तिनके में भी जीवन धारा जाग उठे,
आश न हो तो हाथी भी ओले जैसे घुल जाते हैं।



मानवता !

दूजे के घर आग लगे, अरु मनुआ तेरा रोय,
दुखियों की चीखें सुन–सुनकर, सुख की नींद न सोय।
सब जग एक ही चीर के धागे, सब जग एक शरीर,
दूजे के पग कांटा लागे, पीर तिहारे होय॥

शर्म करो

बापू जी के खून से अब तक,
लाल है दामन शर्म करो ॥

हँस हँस कर तुम तोड़ चुके हो,
प्यार का दर्पण शर्म करो ॥

यह नेहरू जो इस धरती पर,
नील गगन सा छाया है ॥

नादानों तुम आज हो उसकी,
जान के दुश्मन शर्म करो ॥

आश का दीपक

लगाओ जान-बूझ कर न आग तुम बहार में ।
जलाओ आश के दिये, दुखों के अंधकार में ॥
निराश होके ज़िंदगी में ज़हर भर रहे हो क्यों ।
उठो उठो कि जीत भी छुपी हुई है हार में ॥

इनसान

आहों में मधुर गीत जगा सकता है ।
विपदाओं के तूफ़ान में गा सकता है ॥
इन्सान अगर चाहे तो कोशिश करके ।
दुनियां को तबाही से बचा सकता है ॥

भविष्य की ओर

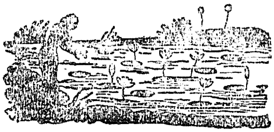
भारत के कण कण से एक दिन, सूरज की किरणें फूटेंगी ।
अंधियारों का दम टूटेगा, विपदा की नब्जें छूटेंगी ।।
मिटते मिटते मिट जायेंगे, इक दिन यह दुख दर्द के साये ।
मेहनत की शक्ति से यह, फौलादी जंजीरें टूटेंगी ।।

कलाकार

इक बूंद में तूफान उठा सकता है ।
अश्रो में भी वह फूल खिला सकता है ।।
चाहे जो कलाकार तो फांसी पर भी ।
जीवन के मधुर गीत सुना सकता है ।।

आराम नहीं कर सकते

मिलजुल के अगर काम नहीं कर सकते ।
दुनियां में कभी नाम नहीं कर सकते ।।
जो लोग के रई को समझते हैं पहाड़ ।
पल भर भी वो आराम नहीं कर सकते ।।



एकता को शक्ति

एकता से मुस्करा सकता है जीबन का चमन ।
भेद शक्ति का यही है, एक तन और एक मन ।।
हिन्द माता के मुकुट में चांद तारे टांक दो ।
मांग में उसकी सजादो, आज सूरज की किरन ।।

बरसात और आंसू

आकाश पे घनघोर घटाओं की है धूम ।
पर हाल गरीबों का किसे है मालूम ॥
बरसात का मुंह देख के रोती हैं छतें ।
है आग पे भीगे हुये बच्चों का हुजूम ॥

विचार

कहीं बिचार शूल हैं कहीं बिचार फूल हैं ।
कहीं गुलाब की छड़ी कहीं खड़े बबूल हैं ॥
कहीं दुखों की रात हैं कहीं सजी बरात हैं ।
कहीं गगन के दीप हैं कहीं धरा की धूल है ॥

इन्सान

यह चांद, यह सूरज, यह गगन मेरा है।
यह फूल, ये कलियां, ये चमन मेरा है॥
उलझा है, ये संसार, मेरी सांसों में।
कण—कण में धड़कता हुआ, मन मेरा है॥

आस का दीपक

आस का जगमग दीपक जब तक, मानव तेरे साथ,
कट जायेगी हंसते हंसते, बैरन काली रात।
जाग रही है भोर सुहानी, हिम्मत से ले काम,
विपदा का यह घोर अंधेरा, पल दो पल की बात।

जिसको कोई राह न हो

वह लोहा है मोम, जो हल्को,
गरमी से गल जाता हो।
वह मानव माटी है जो,
हर सांचे में ढल जाता हो॥
जिसकी कोई राह न हो,
वह पग-पग ठोकर खाता है।
वह डालर बेकार है जो,
दो पैसे में चल जाता हो॥

बचिये उन लोगों से

बचिये उन लोगों से जिनके,
तन उजले मन काले।
बातों में अमृत की वर्षा,
मन हैं विष के प्याले॥
देखो तो तन-मन-धन हर दो,
जो चाखो सो थूको।
इन लोगों की रीति अनोखी,
इनके दांव निराले॥

मुस्कान भर दो !

दुखों से कांपते होठों में साथी?
कली की मोहनी मुस्कान भर दो ।
सिसकते जीवनों की हिंचकियों में,
रसीली बांसुरी की तान भर दो ।।
नये हिंदोस्तां के भाग्य हो तुम,
या आजादी की वीणा, राग हो तुम ।
ग़मों की चोट से टूटे दिलों में,
नई आशा नए अरमान भर दो ।।

दिलों का प्यार

स्वर्ग बन सकती है यह,
दुनिया दिलों के प्यार से ।
जिन्दगी का विष बदल,
सकता है अमृत धार से ॥
मन की वीणा में अगर,
बस जांय मानवता के गीत ।
फूट निकले पुष्प की,
मुस्कान हाहाकार से ॥

भेदभाव में विष की गांठें

जीवन के आकाश की शोभा,
प्रेम का जगमग-जगमग तारा,
भेद भाव में विष की गांठें,
मानवता में अमृत धारा,
जग-सागर की रीति को समझो,
हार को जानो जीत को समझो,
जिस किश्ती पर पाप के साये,
उस किश्ती से दूर किनारा।

हिम्मत की पतवार के आगे

विपदा से जी छोड़ के अपना,
सर ना झुका मँझधार के आगे
उठते तूफां दब जाते हैं,
हिम्मत की पतवार के आगे ॥
विश्व शांति की देवी पर,
अपना तन मन भेंट चढ़ा दे ।
मन की नैया डोल न जावे,
डालर की झंकार के आगे ॥

करनी के फल

सुख दुख जीवन रूख के फल है.
करनी रस से पलते हैं।
करनी के सांचों में हरदम,
हंसते रोते ढलते हैं।।
जिनकी करनी में विष धारा,
जीवन भर वह जलते हैं।
जिनकी करनी में अमृत हो,
नाम, उन्हीं के चलते हैं।।

धोके की दीवार

धोके की दीवार सदा,
गिरती रहती है बन–बन कर ।
सच्चाई के वीर सिपाही,
बढ़ जाते है तन–तन कर ।।
सच्चाई को लाख छुपाये कोई,
खुल ही जाती है ।
सूरज की किरनें आयें,
जैसे बादल से छन-छन कर ।।

आपस के झगड़े

आपस के झगड़ों में कब तक,
अपना बल बर्बाद करोगे ।
अपने घर में आग लगाकर,
कब तक तुम फरियाद करोगे ।।

आने वाली नसलें तुम पर,
लानत की बौछार करेंगी ।
आज की कड़वी-कड़वी बातें,
कल रो-रोकर याद करोगे ।।

अंगारों से खेल

मानव माया लोभ में फंसकर,
अंगारों से खेल रहा है।
झूठी आशा के कोल्हू में,
अपने मन को पेल रहा है।
पग-पग पाप बसा है जग में,
क्रोध-कपट है घट-घट वासी।
मानवता के दीप बुझे हैं,
घोर अंधेरा फैल रहा है।

प्यार की नजरें

प्यार का सौदा प्यार से होगा,
झूठी हैं ज़रदार की नज़रें।
धन दौलत से हाथ न आयें,
मीठी मीठी प्यार की नज़रें।
क्रोध कपट के अंगारों में,
जलने वालों होश में आओ।
प्यार की ठंडी छांव को तरसें,
आज दुखी संसार की नज़रें।

विद्यार्थियों से

विद्या की सीढ़ियां चढ़ते रहो,
ठोकरें खाओ मगर बढ़ते रहो ।
एक दिन महनत का फल मिल जायगा,
मन की आशा का कमल खिल जायगा ।

एक दिन विद्वान हो जाओगे तुम,
इल्म से इन्सान हो जाओगे तुम ।
देश की सेवा तुम्हारा काम हो,
काम हों ऐसे कि जग में नाम हो ।

गणेश उत्सव

(गणेश उत्सव पर सी० सी० का भाषण)

सब अपने कर्त्तव्य का, पालन करते जायें ।
मानव के, संसार में, काम सुधरते जायें ॥
जग के जन्तर जाल में, धर्म, कर्म का नाम ।
जैसा करनी रूप हो, वैसे आयें दाम ॥
जब लग हम विद्यार्थी, तब लग जीवन साथ ।
मानवता की लाज है, ज्ञान ध्यान के हाथ ॥

खाय झकोले !

आंखें सूनी, अंतर आकुल, मौत खड़ी पग पग मुंह खोले ।
सुन्दर-सुन्दर आशाओं, की नाव भंवर में खाय झकोले ॥
जग में चारों ओर कुछ ऐसा, पाप–कपट का जाल बिछा है ।
मानवता की कोमल बगिया सूख रही है हौले–हौले ॥

मैं मानव हूं

यह मस्त पवन, घनघोर घटा, यह चांद सितारे मेरे हैं ।
यह भोर सुहानी मेरी है, यह रैन नज़ारे मेरे हैं ॥
मैं मानव हूँ दुनियां मेरी सांसों से जीवन पाती है ।
फूलों में मरी सांसों की महक कलियों में इशारे मेरे हैं ॥

प्रेम-डगर

प्रेम-डगर पर पग धर पगले, बैर-बुराई छोड़,
मानवता के तार से अपनी, जीवन डोरी जोड़ ।
झूठा जग का सोना-चांदी, झूठे मोती, लाल,
सच्चाई की पारस बनजा, लोभ से नाता तोड़ ।

समय की मार

बाबू जी ! एक पैसा दे दो,
मेरी मां बीमार पड़ी है ।
चल हट, क्यों बक बक करता है,
मेरी बिगड़ी कार पड़ी है ।

छूट गये सब महल अटारी,
कल के राजा आज भिखारी ।
मानव भूल गया मानवता,
समय की ऐसी मार पड़ी है ॥

आजादी का पेड़

जनता चिन्तित राज में खट-पट,
ऐसे कैसे काम चलेगा,
बे-बत्ती बे-तेल भला क्यों,
मन आशा का दीप जलेगा ।

भारत-मां के राज दुलारो,
बर्बादी को अब न पुकारो,
क्रोध-कपट की धरती पर क्या,
आज़ादी का पेड़ फलेगा ।

मन--शक्ति

दुःख की लहरें दब न सकेंगी,
कागज की पतवारों से ।
जीवन नैया बच न सकेगी,
यूं तूफानी धारों से ॥
बिन विशवास के इस दुनियां में,
चारों ओर अंधेरा है ।
मन शक्ति को होश में लाओ,
हिम्मत की ललकारों से ॥

जय हो ! वीर जवाहरलाल

प्यार तुम्हारा घट-घट वासी तुम सब के सरताज ।
हिन्दु - मुस्लिम - सिख - ईसाई सब के दिल पर राज ॥
सारी दुनियां में गूंजा है नाम तुम्हारा आज ।
सुख की माया से जनता का मन है माला-माल ॥
जय हो वीर जवाहरलाल ॥

तुमने देश के झंडे गाड़े सात समुन्दर पार ।
तुमने अपने खून से सींची भारत की फुलवार ॥
फांसी के फंदों को समझे तुम फूलों के हार ।
काट दिये योरुप वालों की मक्कारी के जाल ॥
जय हो वीर जवाहरलाल ॥

अपनी छाती पर हंस-हंस कर खाये जहरी बान ।
रोक दिये अपनी शक्ति से बढ़-बढ़ कर तूफ़ान ॥
अपनी जान से प्यारा जाना आज़ादी का मान ।
आज तुम्हारी कुर्बानी से देश हुआ खुशहाल ॥
जय हो वीर जवाहरलाल ॥

आज तुम्हारे दम से कायम आज़ादी की छांव ।
मानवता के जगमग दीपक चमके गांव – गांव ॥

तुमने जिस धरती पर रक्खे अपने कोमल पांव ।
उस धरती के कंकर–पत्थर, हीरा, मोती, लाल ॥

जय हो वीर जवाहरलाल ॥

तुम आये तो जाग उठे हैं इस धरती के भाग ।
मन वीणा पर नाच रहे हैं आशाओं के राग ॥

कोनों में दब कर बैठे हैं देश के बैरी नाग ।
आज तुम्हारे जयकारों से जागउठा भूपाल ॥

जय हो वीर जवाहरलाल ॥

श्री जगजीवनराम की तकरीर

अभी पूरी तरह जागे नहीं हम,
अभी तो सिर्फ आँखें मल रहे हैं ।
अभी टूटा नहीं योरुप का सपना,
अभी गफलत के सिक्के चल रहे हैं ॥
उठो दुःख दर्द के मारे गरीबों,
बढ़ो और देश की क़िस्मत बदल दो ।
मचलती हैं अभी होटों पे आहें,
अभी आँखों में आंसू ढल रहे हैं ॥

होली पर श्री भगवानसहाय चीफ़ कमिश्नर की तकरीर

कीचड़ में मत घोलिये, मानवता का रंग ।
मन गागर से फैंकिये, क्रोध कपट की भंग ।।

पस्ती से मत देखिये, मस्ती के त्यौहार ।
हंस–हंस कर मत तोड़िये, आज़ादी के हार ।।

ऐसा रंग जमाइये, आजाए आनन्द ।
होली में मत कीजिये, ज्ञानदुआरे बन्द ।।

गाली दुःख का ज़हर है, गाली मन का मैल ।
कब तक मन को भायेंगे, पागलपन के खेल ।।

अपने–अपने धर्म पर, सब को है अधिकार ।
फिर कैसी ये फूट है, फिर कैसी तकरार ।।

दूजे पर मत छोड़िये, ऐसा कोई बान ।
जिससे उसके धर्म का, होता है अपमान ।।

कब तक हर त्यौहार में, फौज–पुलिस का हाथ ।
कब तक दौड़े जाओगे, मूरखता के साथ ।।

मिल–जुलकर सब छेड़िये, हंसी खुशी के राग ।
मानव बनकर खेलिये, आज़ादी की फाग ।।

बापू की याद में

सच्चाई की राह पै चलते, चलते, सारा जीवन बीता ।
हिंसा की सेना से लड़ कर, सत्य अहिंसा का युद्ध जीता ॥
दुखियारों के मित्र थे बापू, राम के सच्चे चित्र थे बापू ।
योरुप के रावण से लड़ कर, लीनी आज़ादी की सीता ॥

मौत के गहरे अंधियारों में, तुमने जीवन दीप जलाया ।
भारत की नैया को तुमने, दुःख सह सह कर पार लगाया ॥
तुम वीरों के वीर थे बापू, हिम्मत की तस्वीर थे बापू ॥
तोड़ के अंग्रेजी जंजीरें, आज़ादी का बीन बजाया ॥

देखो सारे देश पै गम के, काले बादल छाये हैं बापू ।
मन वीणा के तार हैं सूने, आंख में आंसू आये हैं बापू ॥
भारत–माता के होठों पर, नाम तुम्हारा कांप रहा है ।
देखो कितने भक्त तुम्हारे फूल चढ़ाने आये हैं बापू ॥

आज से बापू हमने अपनी, मंज़िल को पहचान लिया है ।
सच्चाई की राह को पाकर दिल में अब ये ठान लिया है ॥
सत्य, अहिंसा के रस्ते पर, हम मिलजुल कर बढ़ जायेंगे ।
वक्त पड़ा तो फांसी पर भी, हँसते हँसते चढ़ जायेंगे ॥

फाग

मानवता का रंग रचाती, प्रेम की होली आई।
हिन्दू खेलें, मुसलिम खेलें, खेलें सिख ईसाई।
कोई सुनाये मुरली की धुन, कहीं बजे शहनाई।
होली आई रे कि प्रीत की ज्योति जले होली आई रे।
होली आई रे कि घर घर नेह ढले होली आई रे।

रानी संग भिखारिन खेले, राजा संग भिखारी।
ऊंच नीच के झगड़े तजकर, खेलें सब नरनारी॥
पलपल लहके, पलपल महके आशा की फुलवारी।
होली आई रे कि रंग गुलाल चले होली आई रे।
होली आई रे कि घर घर प्रेम ढले होली आई रे।

गोकुल में जब होली खेलन आयें कृष्ण मुरारी।
मन का चीर गुलाबी कर दे नयनों की पिचकारी।
राधा बोलें, श्याम सांवरे, तुम जीते मैं हारी।
होली आई रे कि भारत देश फले होली आई रे।
होली आई रे कि घर घर रङ्ग ढले होली आई रे।

भाषा

अगर चलती रहे आसान हिन्दी,
तो बन सकती है सब की जान हिन्दी।
जिसे हर एक समझे और बोले,
दिलों की बात जो फूलों में तोले।

ज़बां पर बह रहे हों शब्द हलके,
कि जैसे बर्फ़ बहती हो पिघल के।
सरलता के जो सांचे में ढलेगी,
यह निश्चय है, वही भाषा चलेगी।

सुनायें जिसमें सब अपनी कहानी,
वही हिन्दी, वही हिन्दोस्तानी॥

प्यार की बातें

मन की माया

अपनी कोमल कविताओं में, प्यार बसा कर लाया हूं मैं।
तन की माया आनी जानी, मन की सच्ची माया हूँ मैं ॥
मेरे सपने तोड़ न देना, प्रेम की डोरी छोड़ न देना।
आशाओं के दीप जलाकर, रूप भवन में आया हूँ मैं ॥



चांद है फीका-फीका

तुम बिन साजन व्याकुल मनवा, तड़पे सांझ सकारे।
मस्त पवन के चंचल झोंके, बरसाएं अंगारे ॥
तुमरे दर्श बिना पूनम का, चांद है फीका-फीका।
असुअन में ढल ढल जाते हैं, नील गगन के तारे ॥

मन के छाले

जब तक तुम थे मेरे साथी,
जीवन क्यारी फूल रही थी।
मन बगिया की डाली डाली,
प्रेम हिंडोले झूल रही थी।
जिस दिन से तुम रूठ गये हो,
सुन्दर सपने टूट गये हैं।
पल-पल अंसुअन की वर्षा है,
मन के छाले फूट गये हैं।
बिरहा का बैरी अंधियारा,
जीवन पथ पर बढ़ता जाये।
अब तो आजाओ साजनवा,
मौत का सागर चढ़ता जाये।

मेरे नैन पियासे

तुम्हारे दरश बिना हैं साजन मन के मोर उदासे ।
तुम्हरी गह में आशाओं के फूल हुये हैं बासे ॥
झूम झूम बरसें बादरवा, पग पग है हरियाली ।
मेरे मन की नदिया सूखी, मेरे नैन पियासे ॥

सांप पै पाँव

हविस के ज़हर में डूबे थे, वे प्यार के गीत,
जो तूने पाक मुहब्बत के नाम पर गाये ।
तेरे ख्याल से यों कांप-कांप उठता हूं,
कि जैसे सांप पै, भूले से पांव पड़ जाये ।

वर्षा

सावन की ऋतु आई है साजन,
छाये हैं बादल काले—काले।
वर्षा की हर बूंद है ऐसी,
जैसे मन के फूटे छाले।
सखियां झूलें प्रेम हिंडोले,
भंवरा गूंजे कोयल बोले।
तुम बिन फूल हैं विष के कांटे,
कलियां ऐसी जैसे भाले।

मोहनी सूरत

गीत बनके लहराये यूं, हृदय के तारों में,
जैसे दीप में ज्योति, जैसे रस बहारों में।
एक बार देखी थी उनकी मोहनी सूरत,
बस गये हैं सपनों में, रचगये विचारों में।

रूप की देवी

छम-छम-छम-छम पांव की पायल जगमग-जगमग गहने,
कोमल-कोमल रूप की देवी झिलमिल कपड़े पहने।
बातों में संगीत की लहरें गति में मस्त बदरवा,
मेरे जीवन सागर में यह कौन आया है बहने।